Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

ARJUN BATCH

CLASS 11th | GEOGRAPHY

2. संरचना तथा भू-आकृति विज्ञान

अध्याय-2 | भाग-3

एकदम BASIC से!



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढ़ेंगे ?

1 उत्तर तथा उत्तरी-पूर्व पर्वतमालाएँ / हिमालय

2 उत्तरी भारत के मैदान

- पृथ्वी की औसत आयु → ५६ करोड़ वर्ष
- प्लेट संचलन
- भारतीय दक्षिणी गोलार्द्ध

शैल के आधार - ३
(1) प्रायद्वीपीय खण्ड
(2) हिमालय
(3) सिन्धु गंगा ब्रह्मपुत्र मैदान

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

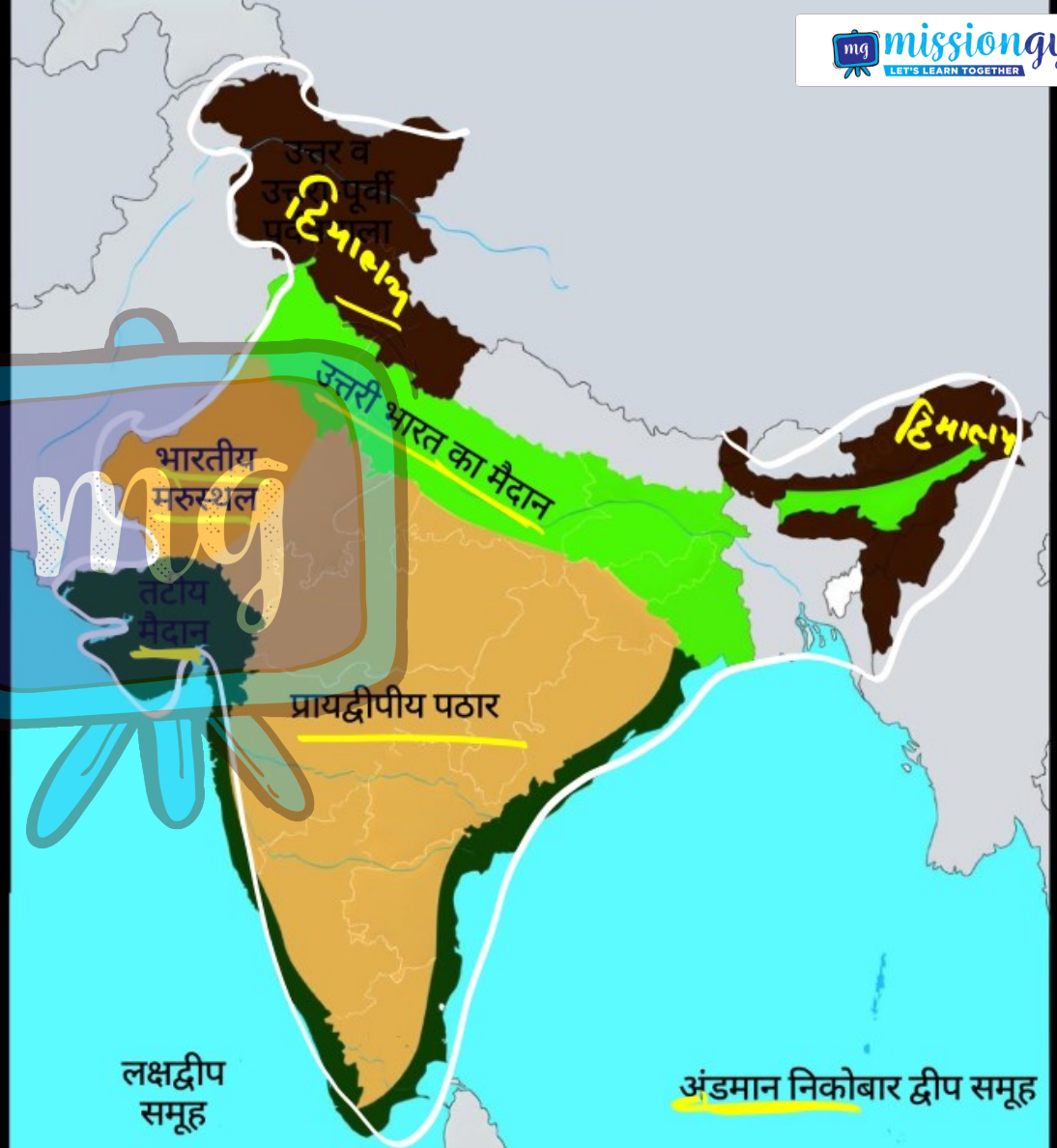
भू-आकृति

- किसी स्थान की भू-आकृति, उसकी संरचना, प्रक्रिया और विकास की अवस्था का परिणाम
- भारत के भू-आकृतिक खण्ड

1. उत्तर व उत्तरी-पूर्वी पर्वतमाला
2. उत्तरी भारत का मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. भारतीय मरुस्थल
5. तटीय मैदान
6. द्वीप समूह

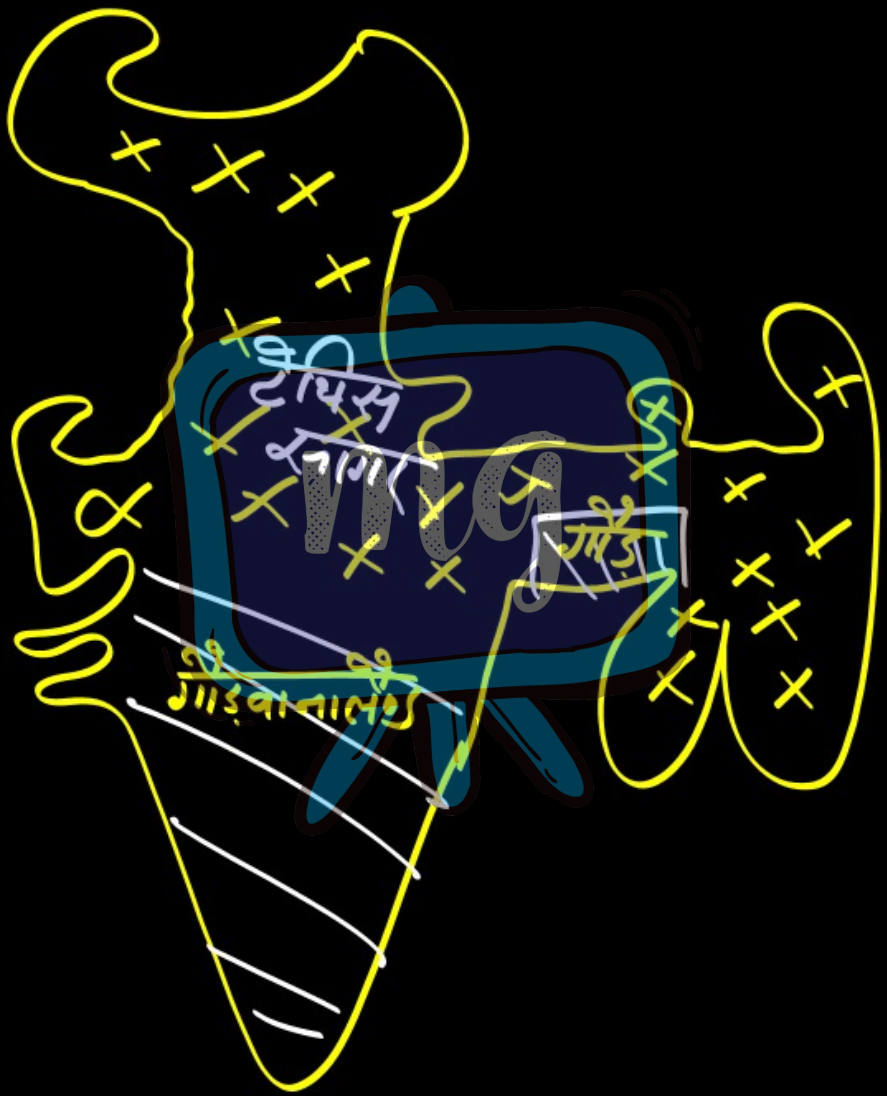
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हिमालय

उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी पर्वतमाला



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

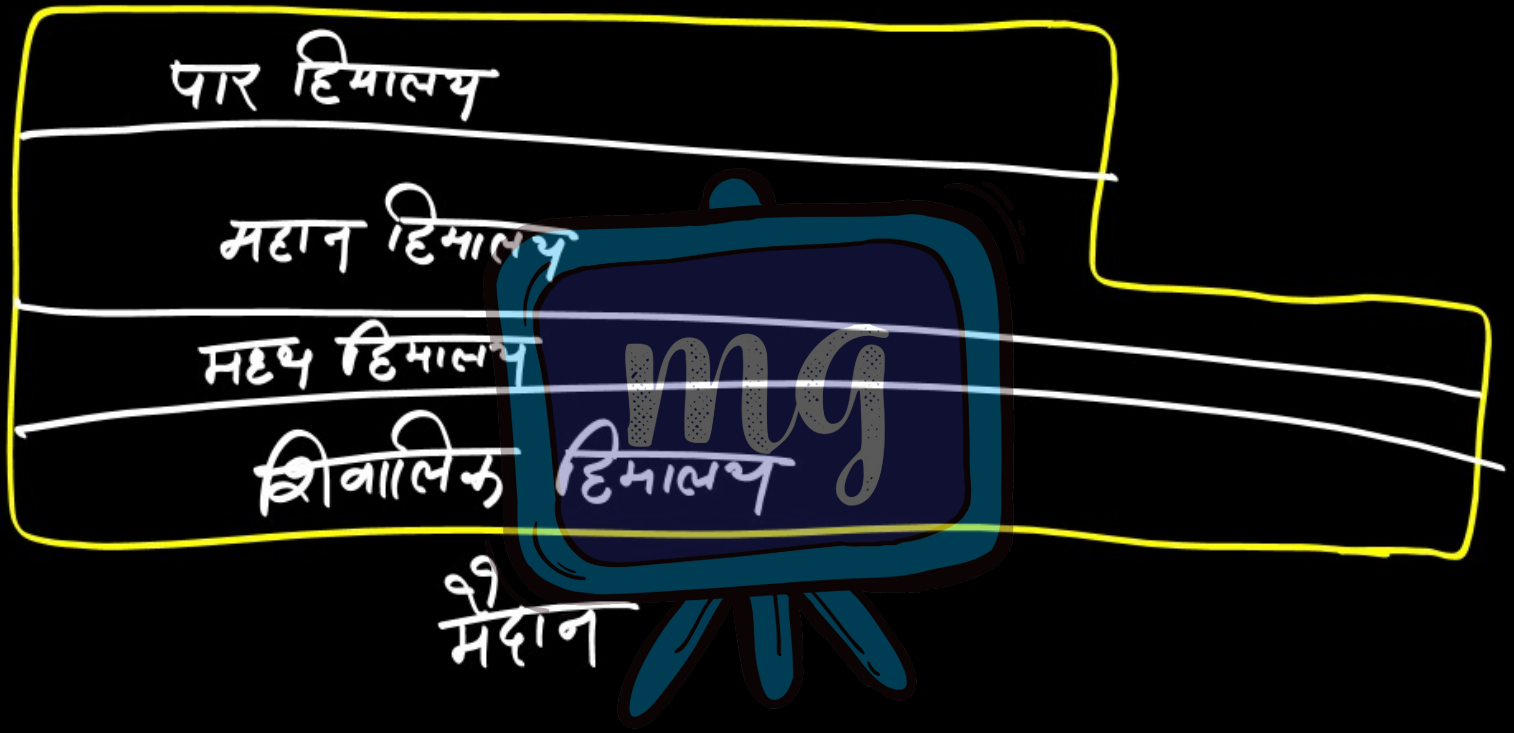
हिमालय

❖ हिमालय में समान्तर पर्वत श्रृंखलाएँ



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

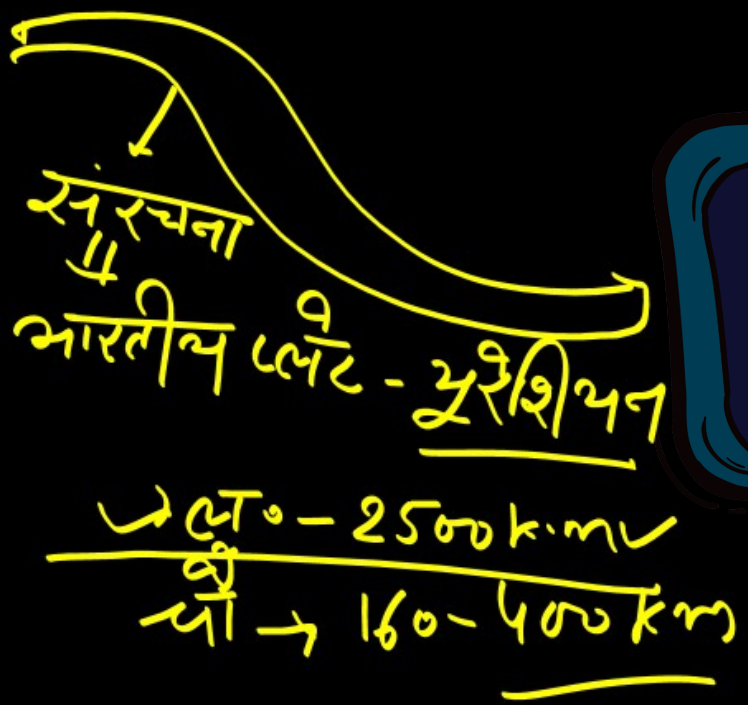
हिमालय-विस्तार

- भारत के उत्तर में
- उत्तर-पश्चिम दिशा से दक्षिण-पूर्व की ओर
- दार्जिलिंग व सिक्किम में पूर्व-पश्चिम दिशा में
- अरूणांचल प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पश्चिम की ओर



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



बृहत् हिमालय

- इसे केन्द्रीय अक्षीय श्रेणी कहते हैं।
- लम्बाई → 2500 कि.मी. (पूर्व-पश्चिम)।
- चौड़ाई → 160-400 कि.मी. (उत्तर-दक्षिण)।

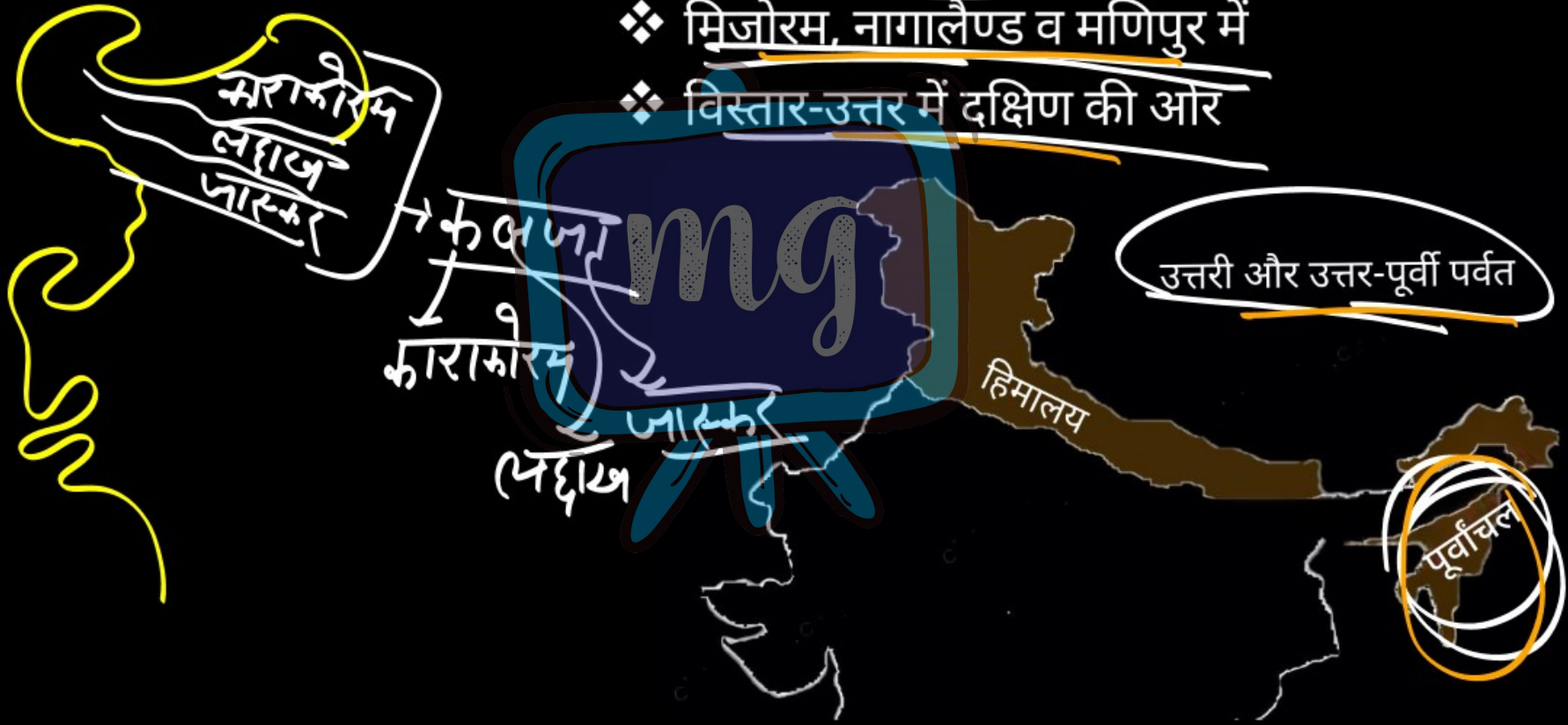


Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तरी-पूर्वी पहाड़ियाँ

- मिजोरम, नागालैण्ड व मणिपुर में
- विस्तार-उत्तर में दक्षिण की ओर



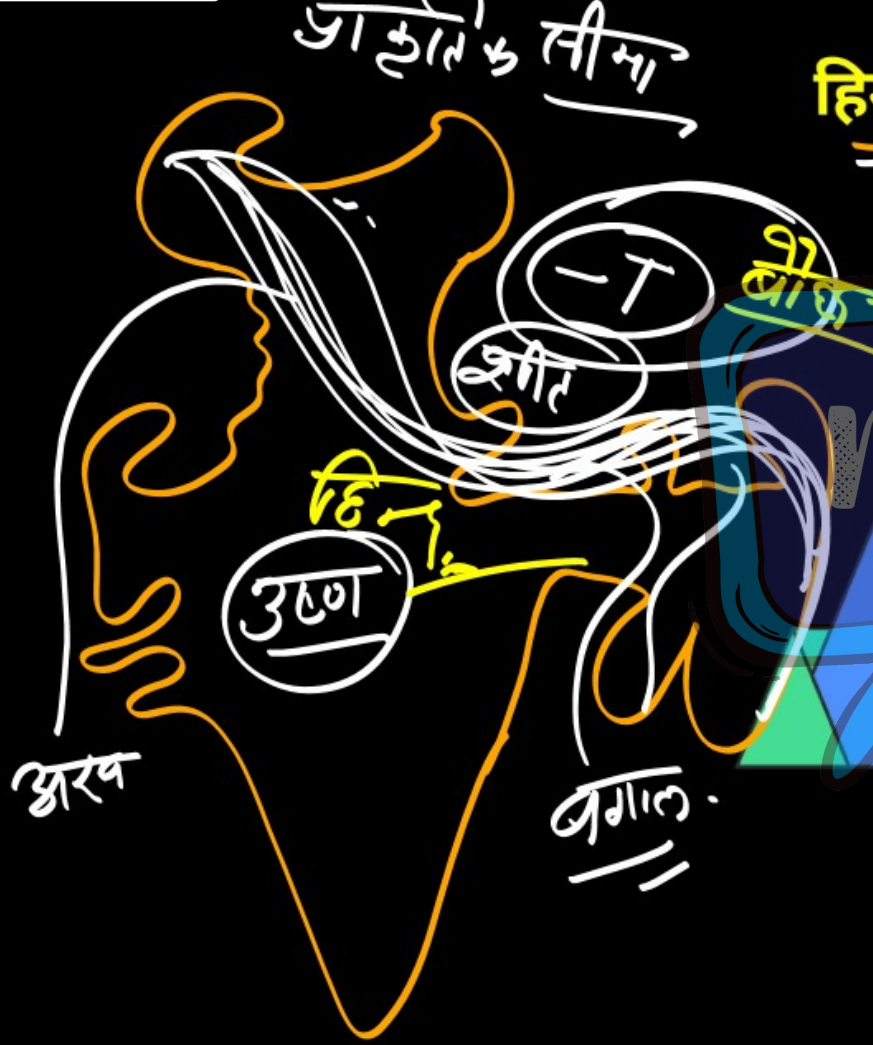
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



हिमालय विभाजक है-

- प्राकृतिक रोधक
- जलवायु विभाजक
- अपवाह विभाजक
- सांस्कृतिक विभाजक

Under CSR Support by
ipca | Foundation

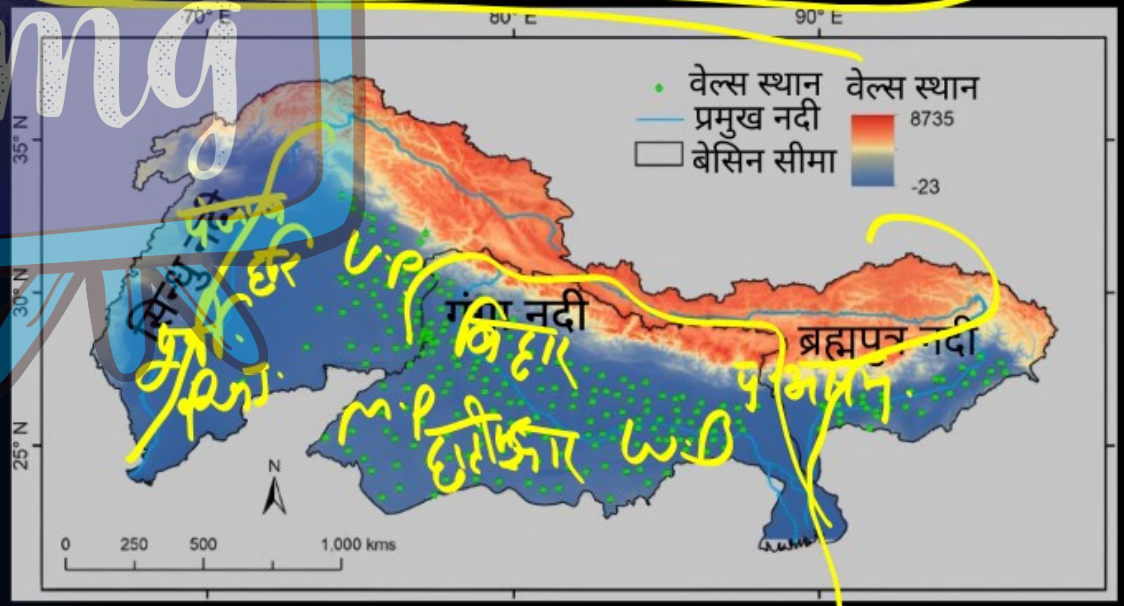
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हिंदूकुश
सुलेमान पर्वत
हिमालय

उत्तरी भारत का मैदान

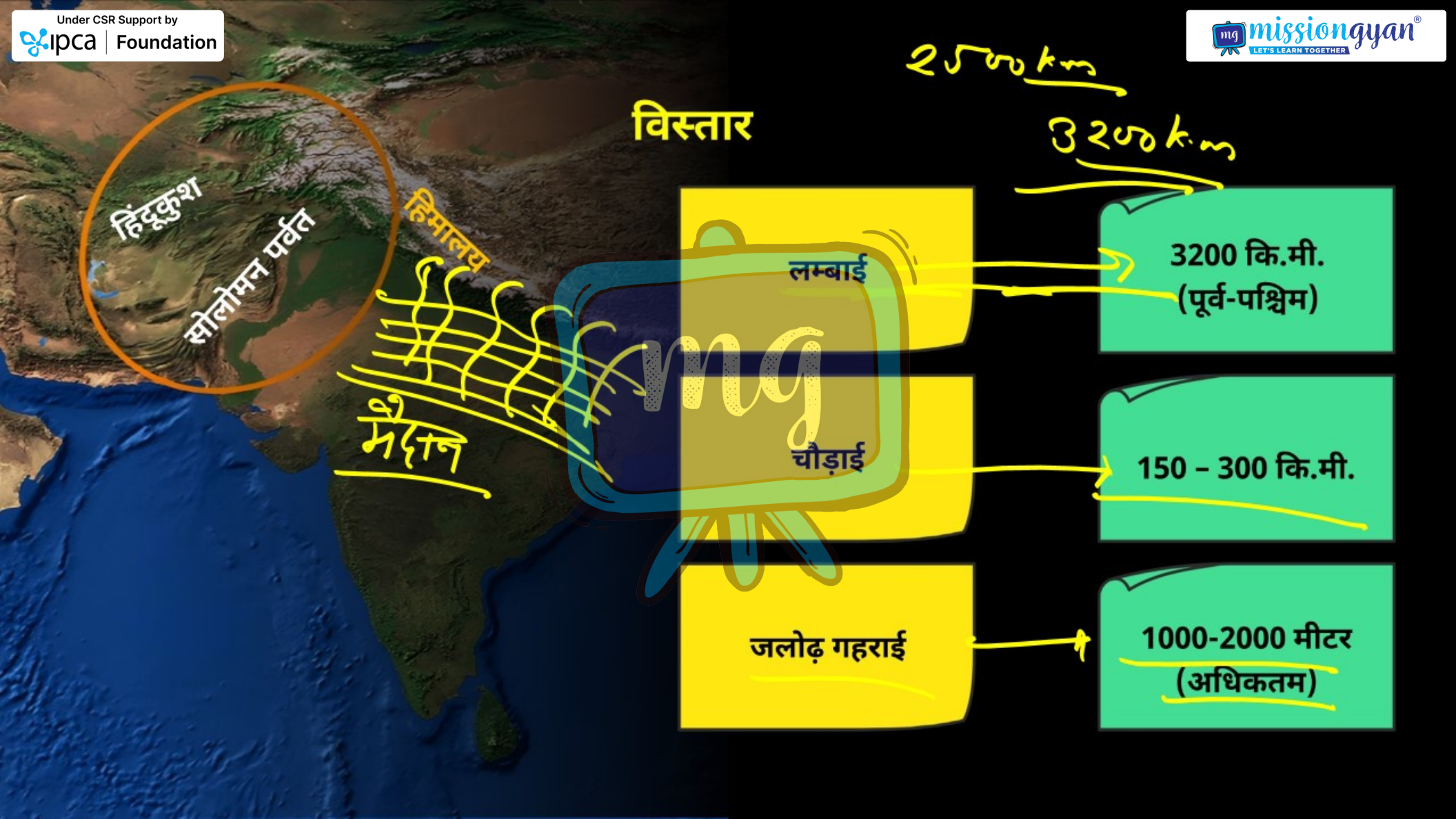
निर्माण

- सिंधु, गंगा व ब्रह्मपुत्र नदियों के जलोढ़ निक्षेप से



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



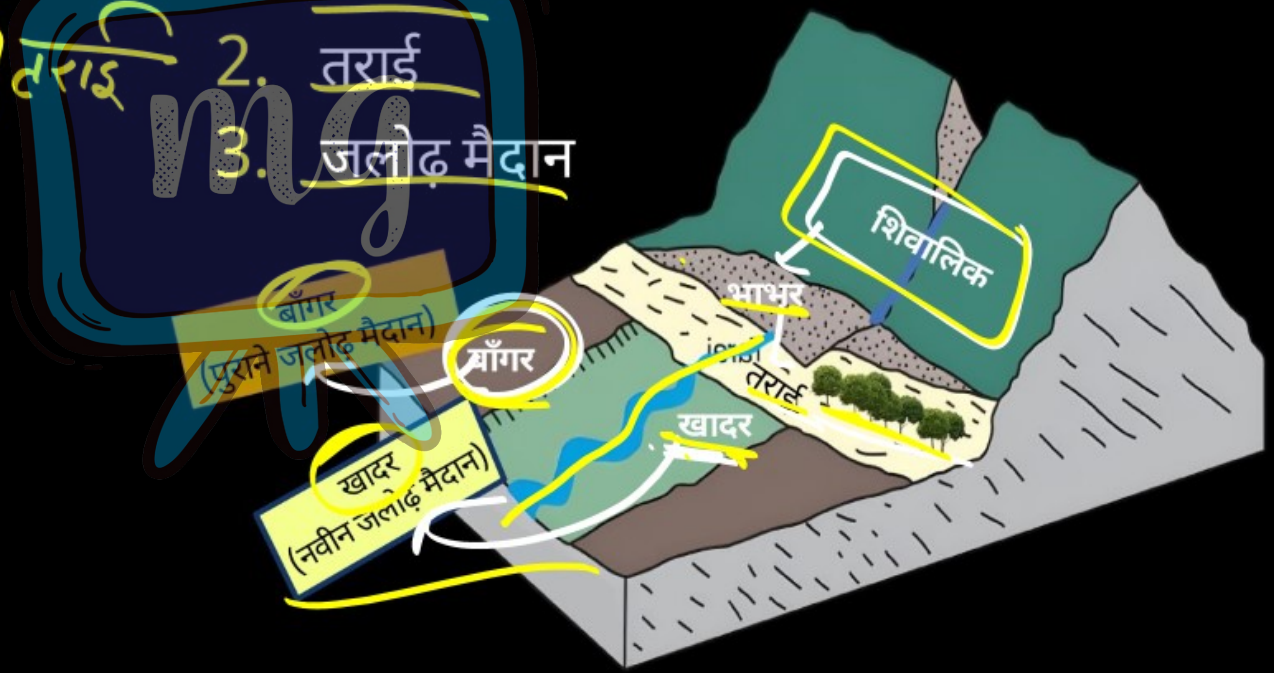
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विभाजन

❖ उत्तर से दक्षिण दिशा में क्रमश:

1. भाभर
2. तराई
3. जलोढ़ मैदान



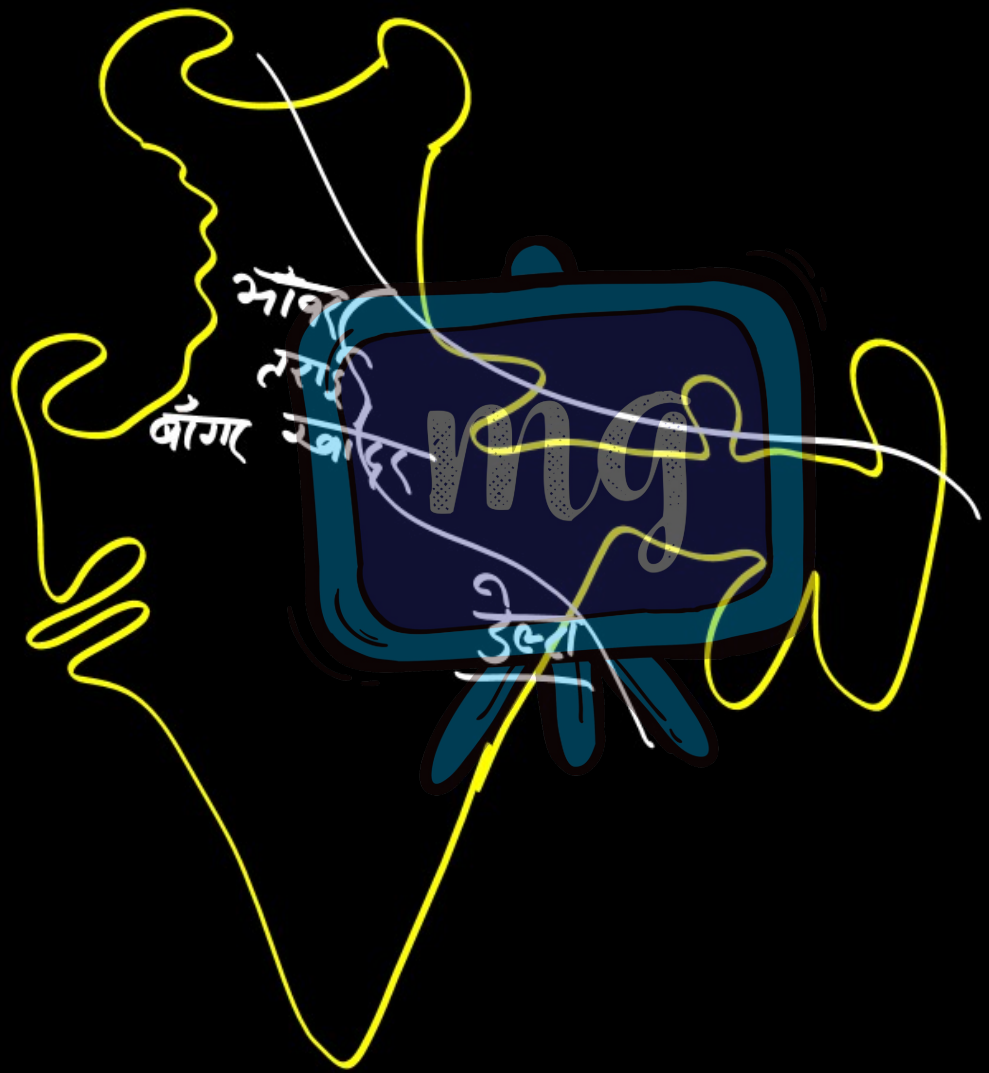
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भाबर प्रदेश → जब नदियाँ पर्वतीय क्षेत्र निकलती हैं तो अपने साथ बड़े-2 कंकड़-पत्थर साथ लेकर चलती हैं जिनका जमाव पर्वतपदीय भू-भाग में कर देती हैं यहाँ पर नदियाँ अदृश्य हो जाती हैं उसे भाबर प्रदेश कहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

डेल्टा → जब नदियां मुहाने पर अपने साथ लाये हुए अवसादों त्रिभुजाकार आकृति में करती हैं। उसे डेल्टा कहते हैं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तराई प्रदेश - जब नदियाँ भाबर प्रदेश से आगे की ओर निकलती तो छोटे-२ कंकड़-पत्थरों का जमाव करती हैं व नदियाँ पुनः दिखाई देने लगती हैं।

→ यहाँ पर दलदली क्षेत्र का निर्माण करती है।

→ इस क्षेत्र में सर्वाधिक जैव-विविधता पायी जाती है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

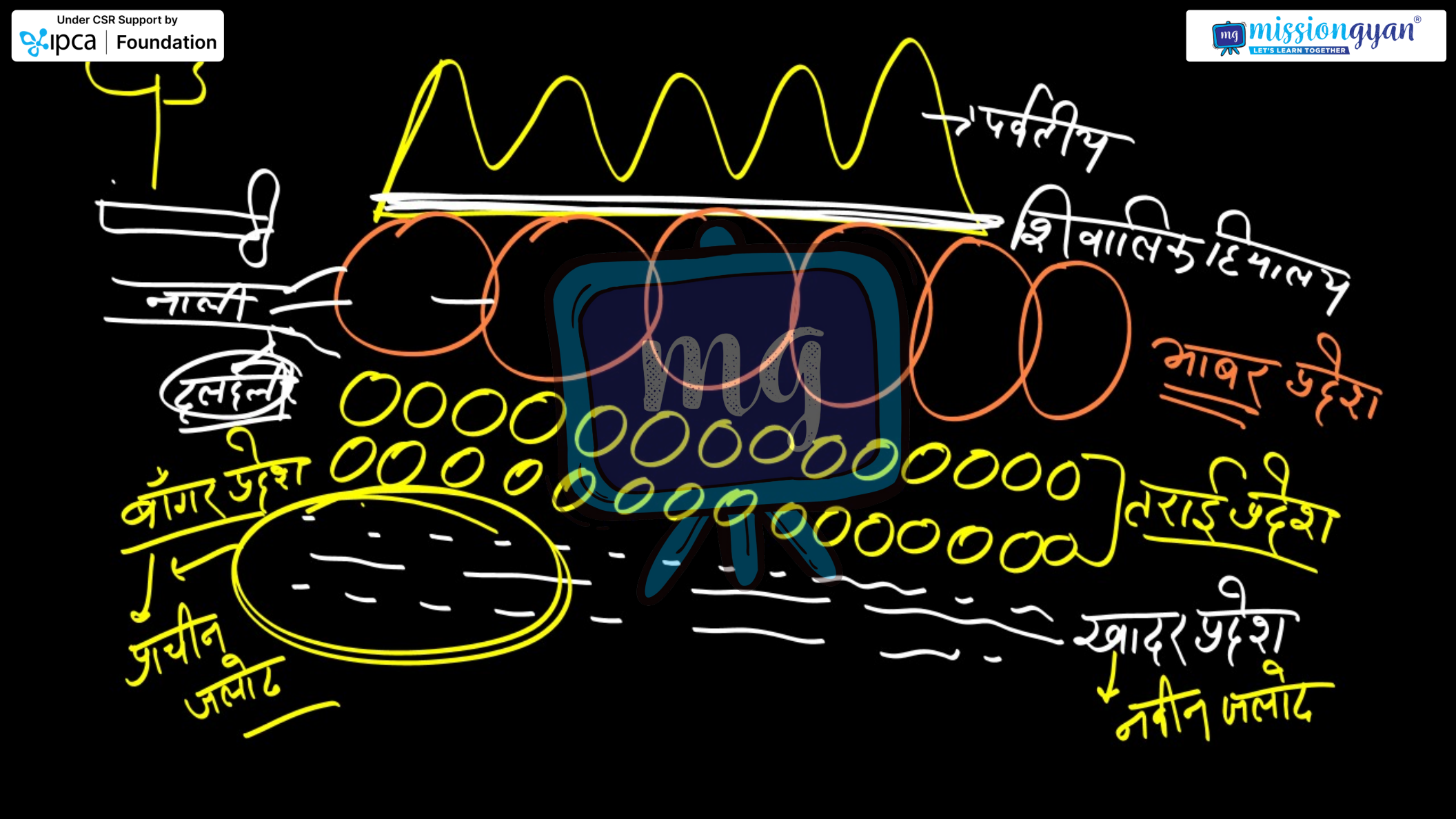
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

खादर प्रदेश → जब नदियाँ तराई प्रदेश आगे की ओर निकलती है तो नवीन जलोढ़ मिट्टी का जमाव करती है। उसे खादर प्रदेश कहते हैं। यह सर्वाधिक उपजाऊ होता है।

बाँगर प्रदेश → खादर प्रदेश का वह भाग जहाँ पर नदियों का पानी नहीं पहुँच पाता। अर्थात नदियाँ मार्ग परिवर्तन कर लेती हैं या विलुप्त हो जाती हैं तो इस प्राचीन जलोढ़ मिट्टी बाँगर प्रदेश कहते हैं

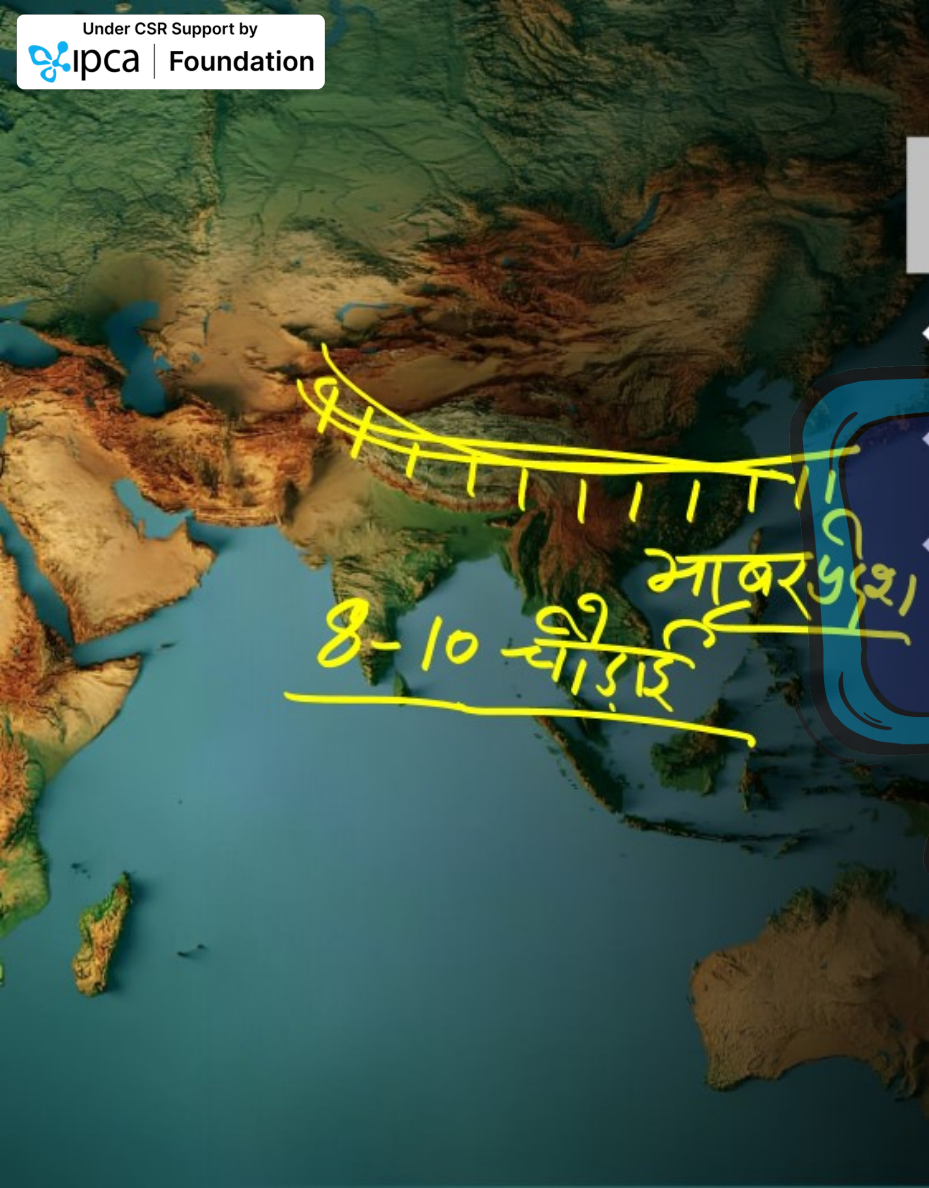
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

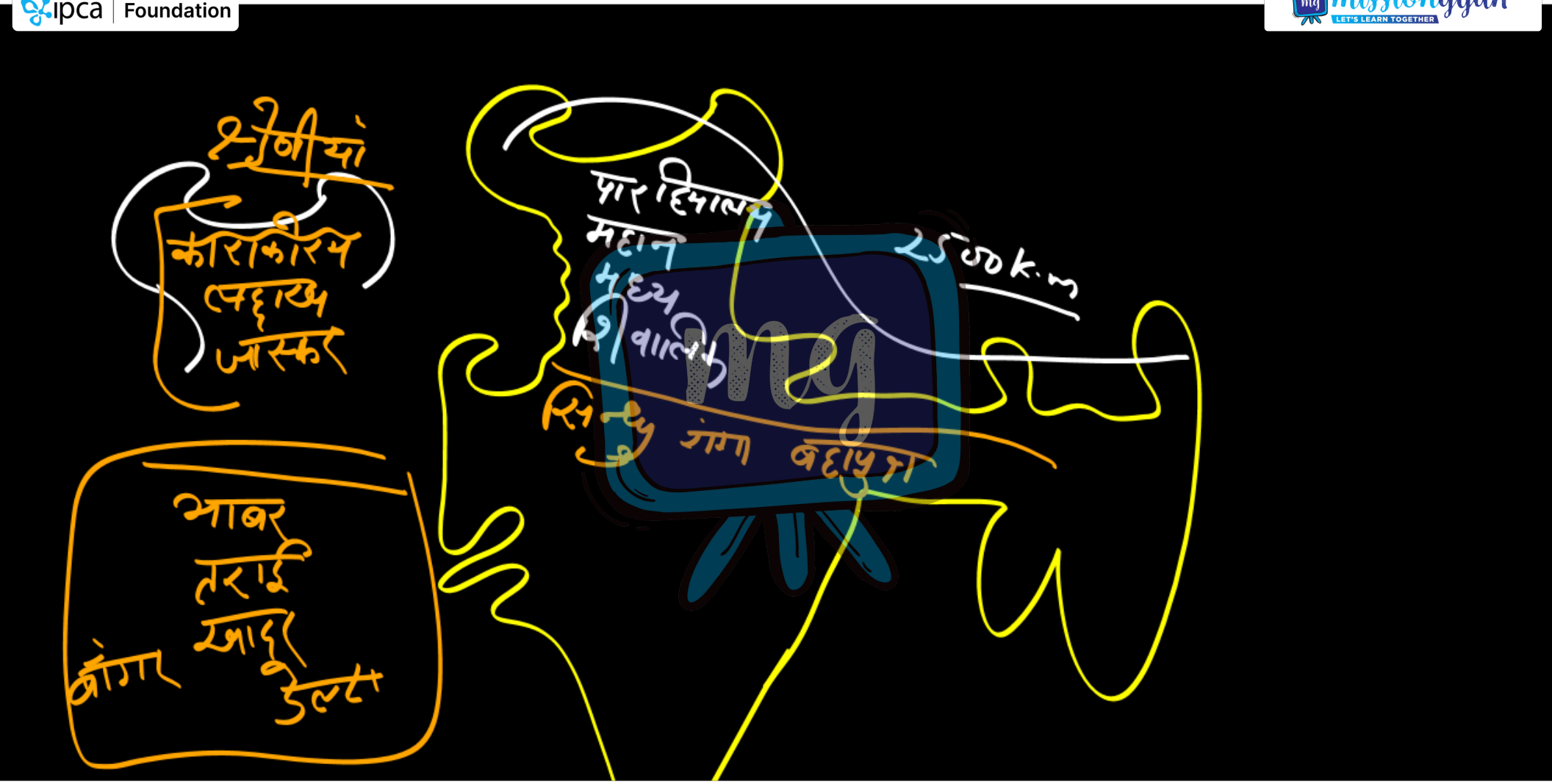


भाभर

- शिवालिक गिरीपाद के समान्तर
- 8 से 10 कि.मी. चौड़ाई की पतली पट्टी
- विशेषताएँ
  - नदियों का भारी जल-भार
  - नदियाँ लुप्त प्राय:
  - नदियों द्वारा बड़े शैल व गोलाश्मों का जमाव

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तराई

भाभर के दक्षिण में

अनूप क्षेत्र निर्मित

चौड़ाई 10 से 20 कि.मी.

प्राकृतिक वनस्पति से ढका क्षेत्र

लुप्त नदियाँ प्रकट

वन्य प्राणियों का घर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जलोढ़ मैदान

तराई के दक्षिण में मैदानी क्षेत्र



बाँगर – पुराने जलोढ़ मैदान

खादर – नवीन जलोढ़ मैदान

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

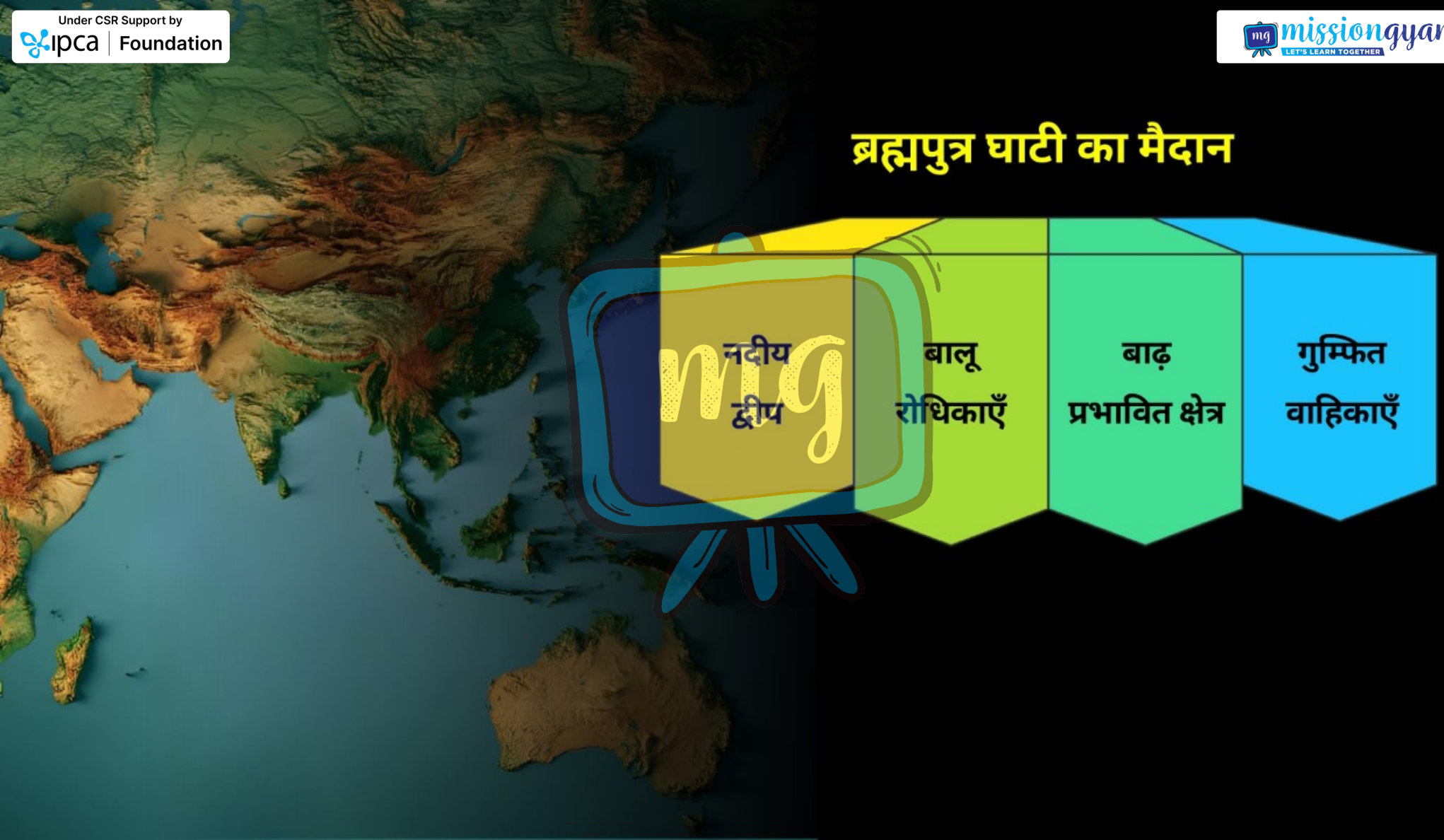
स्थलरूप

- नदी की प्रौढ़ावस्था में निर्मित अपरदनी व निक्षेपणात्मक स्थलकृतियाँ
  - बालू-रोधिका
  - विसर्प
  - गोखुर झील
  - गुंफित नदियाँ

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ब्रह्मपुत्र घाटी का मैदान



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

डेल्टा

- नदी के मुहाने पर निर्मित
- सपाट मैदान
- समुद्र तल से औसत ऊँचाई 50-100 मीटर
- उदाहरण – सुंदर वन डेल्टा

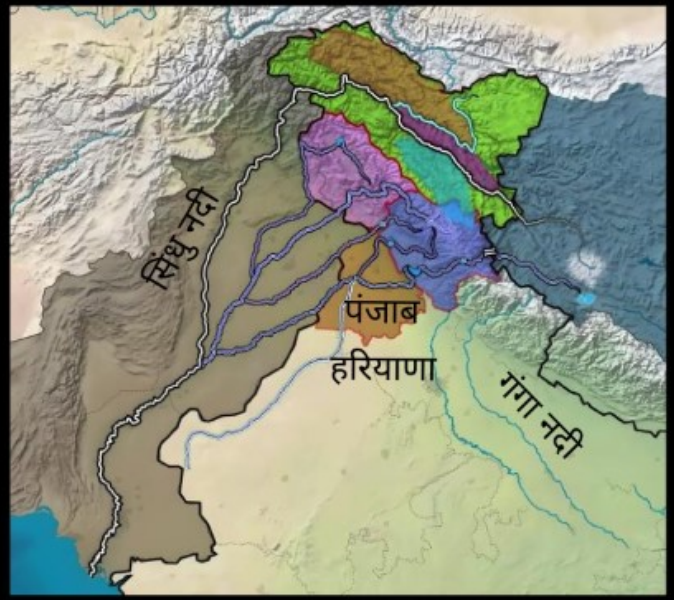


Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

दिल्ली व हरियाणा राज्य सिंधु और गंगा नदी तंत्रों के बीच जल-विभाजक है।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ब्रह्मपुत्र नदी का प्रवाह

- भारत में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा में प्रवाहित।
- धुबरी के समीप दक्षिण की ओर 90° मुड़ जाती है।
- भारत से बांग्लादेश में प्रवेश।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

- ये मैदान उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से निर्मित है।
- प्रमुख फसलें – गेहूँ, चावल, गन्ना और जूट।
- यहाँ जनसंख्या घनत्व ज्यादा है।

